C-8 (Knowledge & curriculum)
B.Ed - IInd year

* दर्शन का अर्थ ⇒ अंग्रेजी शब्द Philosophy शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के दो शब्दों के मेल से हुई है। — फिलॉस (Philos) और सोफिया (Sophia)। फिलॉस का अर्थ है 'प्यार' तथा सोफिया का अर्थ विवेक या बुद्धिमता। इस प्रकार फिलोसोफी का अर्थ है "विवेक से प्रेम"। यह शाश्वत सत्य के लिए खोज से संबंधित है तथा वह मनुष्य जो स्वयम् को इसकी खोज मे निर्लिप्त रखता है, दार्शनिक कहलाता है।

दर्शन मनुष्य को बुद्धिमता प्रदान करता है। जिसकी सहायता से वह सम्पूर्ण विश्व, इसकी प्रकृति, इसके उद्देश्य, स्वयम् के साथ सम्बन्ध तथा अपने चारो ओर की व्यक्तियों से इसके संबंध के बारे मे सूझ-बूझ प्राप्त करता है।

दर्शन की परिभाषा ⇒

1) रसेल के अनुसार ⇒ अन्य विद्याओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है।

2) R.W. सैलर्स के अनुसार ⇒ दर्शन एक व्यवस्थित विचार द्वारा विश्व और मनुष्य की प्रकृति के विषय मे ज्ञान प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास है।

3) हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार ⇒ दर्शन एक सार्वभौमिक विज्ञान के रूप में प्रत्येक से सम्बंधित है।

4) अरस्तु के अनुसार ⇒ दर्शन वह विज्ञान है जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जाँच करता है।

5) डा० राधाकृष्णन के अनुसार ⇒ दर्शन वास्तविकता के स्वरूप का तार्किक चिन्तन है।

6) फिक्टे के अनुसार ⇒ दर्शन ज्ञान का विज्ञान है।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर दर्शन के प्रत्यय को स्पष्ट किया जा सकता है। दर्शन का अभिप्राय किसी समस्या के बारे मे जीवन के बारे मे तथा व्यापक संसार के बारे में, प्राकृतिक चिन्तन से है।

दर्शन जीवित रहने की शक्ति तथा ढंग है। यह उत्तम जीवन व्यतीत करने का साधन प्रदान करता है।

दर्शन की शाखाएँ

तत्व मीमांसा	अस्तित्व का अध्ययन	वहाँ क्या नही है?
ज्ञान मीमांसा	ज्ञान का अध्ययन	इसके बारे में कैसे जान सकता है?
नीति शास्त्र	क्रिया का अध्ययन	मुझे क्या करना चाहिए।
सौन्दर्यशास्त्र	कला का अध्ययन	जीवन कैसा हो सकता है।

किसी भी दर्शन के स्वरूप को समझने के लिए तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा व मूल्य मीमांसा को पहले जानना आवश्यक हो जाता है। जो निम्नलिखित चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। ——

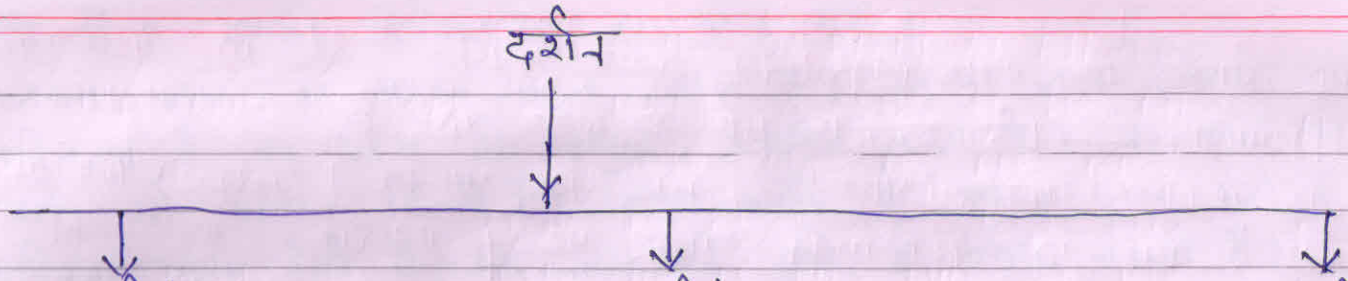

दर्शन

तत्व मीमांसा

1) धर्म शास्त्र
2) सत्ता शास्त्र
3) ब्रह्माण्ड शास्त्र
4) सृष्टि शास्त्र
5) आत्म - दर्शन

ज्ञान मीमांसा

1) ज्ञान का उद्गम
2) ज्ञान के प्रकार
3) ज्ञान की विधियाँ
4) ज्ञान की वैधता
5) ज्ञान के स्रोत

मूल्य मीमांसा

1) तर्क - शास्त्र
2) नीति शास्त्र
3) सौन्दर्य - शास्त्र

1) धर्मशास्त्र — यह ईश्वर के अस्तित्व का अध्ययन करता है।
2) सत्ता शास्त्र — यह अन्तिम वास्तविकता का अध्ययन है।
3) ब्रह्माण्ड शास्त्र - यह सृष्टि के रहस्यों का अध्ययन है।
4) सृष्टि शास्त्र - यह संसार के उद्गम तथा विस्तार के सिद्धान्तों से संबंधित है।
5) आत्म दर्शन — यह 'स्व' के दार्शनिक विश्लेषण से संबंधित है अर्थात मैं कौन हूँ।

18.05.2020

समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित ~~[illegible]~~ शिक्षा नीति-2006

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2006 में निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया गया है —

1. ⇒ प्राइमरी, माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा स्तर पर विकलांग बच्चों की संख्या तथा शिक्षा जारी रखने की वार्षिक समीक्षा करने के लिए अलग व्यवस्था की जायेगी।
2. ⇒ विकलांग बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में समावेशी शिक्षा के मॉडल स्कूल स्थापित किये जायेंगे।
3. ⇒ अनेक विकलांग बच्चे जो समावेशी शिक्षा में शामिल नहीं हो सकते उनके लिए विशेष स्कूलों में शैक्षणिक सेवाएँ मिलती रहेंगी। विशेष स्कूल मुख्य धारा की समावेशी शिक्षा में शामिल होने के लिए विकलांग बच्चों को तैयार करने में सहायता करेंगे।
4. ⇒ विभिन्न विकलांग बच्चों के लिए पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन पद्धति का विकास किया जायेगा। जिनमें उनकी आवश्यकताओं तथा क्षमताओं का ध्यान रखा जायेगा। गणित की पढ़ाई केवल एक भाषा सीखना आदि जैसी कुछ रियायत देकर परीक्षा पद्धति में सुधार किया जायेगा। जिससे की उसें विकलांगों के अनुकूल बनाया जा सके।
5. ⇒ 6 वर्ष की आयु तक विकलांग बच्चों की पहचान की जायेगी तथा इसके बाद उनका आवश्यक उपचार किया जायेगा ताकि वे समावेशी शिक्षा में भाग ले सकें।
6. ⇒ मानसिक रूप से अपंग बच्चों के लिए मनोवैज्ञानिक पुनर्वास केन्द्रों में शिक्षा सुविधाएं प्रदान की जायेगी।

(9) ⇒ सभी स्कूलों को सभी प्रकार के विकलांग बच्चों के लिए बाधा मुक्त बनाया जायेगा ताकि सभी बच्चों की इन स्कूलों तक पहुँच हो।

(5) ⇒ शिक्षण का माध्यम तथा उसकी पद्धति को सामान्य तथा बाधित बच्चों के अनुकूल बनाया जायेगा ताकि सभी बच्चों का शैक्षिक विकास सम्भव हो सके।

(4) ⇒ तकनीकी, अनुदेश तथा विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था एक ही स्कूल में उपलब्ध करवाई जायेगी।

(10) ⇒ स्कूलों में सहायक सामग्री उपलब्ध करवाई जायेगी। स्कूलों में पुस्तकालयों, ई-पुस्तकालय, ब्रेल पुस्तकालय एवं सर्किंग पुस्तकालय स्रोतों इत्यादि की स्थापना करने के लिए सुविधाओं का विस्तार करने हेतु प्रोत्साहित किये जायेंगे।

(11) ⇒ राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालयों तथा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाया जायेगा।

(12) ⇒ सांकेतिक भाषा, वैकल्पिक व अभिवृद्धि सम्बन्धी संप्रेषण माध्यमों को मान्यता प्रदान की जायेगी। तथा इसे लोकप्रिय बनाया जायेगा।

(13) ⇒ स्कूलों में माता-पिता तथा अध्यापक परामर्श व निवारण प्रणाली की स्थापना की जायेगी।

(14) ⇒ विकलांग बच्चों को गृह भाषा में पाठ्यक्रम पढ़ने के लिए उपलब्ध होगा।

(15) ⇒ टेक्नोलॉजी आधारित शिक्षा पर जोर दिया जायेगा।

(16) ⇒ सरकार द्वारा विकलांग बच्चों को आर्थिक, शैक्षिक तथा अन्य अवसरों की प्राप्ति के लिए अवसर प्रदान किया जायेगा।

मृदा संरक्षण :- भूमि की उपरी उपजाऊ परत मृदा (मिट्टी) में अनेक प्रकार के खनिज तत्व मिश्रित होते है इन खनिजों के प्राकृतिक मिश्रण से मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बनी रहती है परन्तु आज, उर्वरको का अधिक प्रयोग, कीटनाशक दवाओं, हिमस्खलन, भूकटाव आदि से मिट्टी का क्षय होता जा रहा है मिट्टी की उत्पादन क्षमता दिन प्रति दिन घटती जा रहा है अतः यह आवश्यक की मृदा क्षय, को रोक कर मृदासंरक्षण पर विशेष बल दिया जाय। जिसके लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने चाहिए

* किसानों को जैविक खाद के लिए जागरूक किया जाय
* उर्वरक (रासायनिक खादो) का कम से कम प्रयोग किया जाय
* कीटनाशक रासायनों का प्रयोग कम किया जाय
* फसल का चक्रीय कृषि विधि अपनाया जाय
* कूड़ा कचरा कारखानों से निकलने वाले दुषित जल का उचित प्रबन्ध किया
* वृक्षारोपड़ पर अधिक से अधिक बल दिया जाय
* बहते हुए जल का संरक्षण तालाबों के माध्यमो से किया जाय।
* अभिभावकों को मिट्टी के बारे बताया जाय।

वन संरक्षण :- वनों पर मानव सभ्यता का विकास निर्भर करता है वन हमें लकड़ी, औषधी, आक्सीजन एवं विविध अमूल्य वस्तुएं प्राप्त होती है जिस पर हमारा जीवन एवं उद्योग निर्भर करता है वन सल्फर डाई आक्साइड कार्बन-डाइ-आक्साइड आदि हानिकारक गैसों को अवशोषित कर पर्यावरण को स्वस्थ बनाए रखते है तथा मिट्टी के कटाव को रोकते है अतः वन संरक्षण करना हमे नितांत आवश्यक है

वन संरक्षण के निम्न कार्य करने होंगे।

* वायुमण्डल में वायु की शुद्धता बनी रहे इसके लिए अधिकाधिक वृक्षारोपण करना चाहिए।
* प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्मदिवस पर एक वृक्ष अवश्य लगाए।
* विद्यालय परिवार की ओर से विद्यालय परिसर हराभरा होना चाहिए
* वन को सुरक्षित रखने के लिए जन जागरण अभियान चलाया जाना चाहिए
* पृथ्वी पर 33% वन का विस्तार होना चाहिए
* पादप रोगों से वनों की सुरक्षा की जाय
* वनों में लगने वाली आग की विभीषिका को रोकने के कठोर कदम उठाए जाय।
* सामाजिक वानिकीय कार्यक्रम को सफल बनाया जाय
* शीघ्र बढ़ने वाले और आर्थिक दृष्टि उपयोगी वृक्षों का वृक्षारोपण किया जाय।

18-5-20